हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

पाठ परियोजना–

केशवदास का प्रकृति चित्रण

मनुष्य का जन्म और उसका विकास प्रकृति के मध्य प्रकृति के ही संपर्क और सहचर में हुआ है। वह आदिकाल से मनुष्य के क्रिया–कलापों की क्रीड़ास्थली रही है। प्रकृति का ही सुरम्य क्रोड़ में मनुष्य नेत्र खोलता है और मृत्युपर्यन्त उसी की लीलाभूमि पर अपने–जीवन के खेल खेला करता है।

प्रकृति का अनंत वैभव मनुष्य के लिए आश्चर्य, कौतूहल, श्रद्धा, अनुरण आदि विभिन्न भावनाओं का विषय रहा है और साहित्य में भी इसी कारण प्रकृति का प्रमुख स्थान है। साहित्य में प्रकृति के भव्य एवं सुरम्य दृश्यों का नाना प्रकार से प्रयोग किया गया है।

हिन्दी में आचार्य केशव ही प्रकृति के विशद तथा स्वतंत्र चित्रण की ओर सर्वप्रथम आकर्षित हुए, जो इस प्रकार हैं–

आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रणः– केशव अलंकार वादी आचार्य थे, जिसमें केशवदास की रामचंद्रिका में प्रकृति वर्णन की दो शैलियां दृष्टिगत होती हैं रामायण की शैली तथा महाकाव्य की। अवध में उड़ती हुई पताकाओं का वर्णन करते हुए केशवदास कहते है–

बहु वायु वस बारिद बहोरहिं अरूभि दामिनि दुति मनो।

मानवीय सौंदर्य का प्रकृति सीता के मुख की उपमा कमल से देते हुए केशवदास कहते हैं–

सुंदर सुवास अरू कोमल अनल अति,

सीता जू को मुख सखि केवल कमल सो।

वहीं राम के मुख की शोभा का वर्णन प्रकृति के उपादानों द्वारा–

अति बदन सोम सरसी सुरंग। तहँ कमल नैन नासा तरंगा।।

जनु जुवति चित्त बिभ्रम विलास। तेह भ्रमर भंवर रस रूप आसा।।

उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण– रामचंद्रिका में प्रकृति के उद्दीपन रूप का राम और सीता के वियोग के प्रसंग में चित्रित हुआ है। वर्षा ऋतु के समय सीता के वियोग में राम कहते हैं–

कलहंस कलानिधि खंजन कंज कछु दिन केसन देखि जिये।

अति अनन लोचन के अनरूपक से मन देखि जिये।

यह काल कराल ते सोधि सबै हठि कै बरषा मिस दूरि किये।

अवधौ बिनु प्रानप्रिया रहिहैं कहि कौन हितू अवलम्बि हिये।।

अयोध्या नगरी के उपवन को केशव ने कामोडडीपन रूप में वर्णित किया है–

देखि बाग अनुराग उपज्जिय। बोलत कलध्वनि कोकिल सज्जिय।

राजति रति की सखी सवेषनि। मनहु बहति मनमय संदेसनि।

उपमान रूप में प्रकृति चित्रण– केशव ने सुर्य, चन्द्र, नक्षत्र, मेघ, समुद्र, वन पर्वत, वृक्ष, आदि के माध्यम से उपमान भोजन करते हैं। उपमेय मुख में उत्कर्ष और उपमान कमल तथा चन्द्र में अपकर्प दिया है–

एकै कहै अमल कमल मुख सीता जू को।
एकै कहै चन्द्र सम आनंद को कन्द री।

रूप और आकार के वर्णन में भी केशवदास ने चमत्कार की प्रेरणा से उपमानों को ग्रहण किया है। मार्ग में जाते हुए राम, सीता लक्षण ऐसे प्रतीत होते हैं मानो–

मेघ मंदाकिनी चारू सौदामिनी रूप रूरे लसैं देहधारी मूनों।
भूरि भागीरथी भारती हंसना अंस के हैं मनो, भाग भारे घनो।।
इसी तरह केशव श्रीदास ने अनेक प्राकृतिक उपमानों का चित्रण किया है।

मानव भावनाओं के रूप में प्रकृति चित्रण– प्रकृति के उपासक कवियों ने, जड़ प्रकृति में भी, पेड़–पौधे में भी मानवसंसार का अनुकरण पायाा है उनमें भी सुख–दुख हर्ष–विषाद, संवदेना आदि का अनुभव किया है। शरद ऋतु को केशवदास ने वृद्धा दासी के रूप में चित्रित किया–

लक्ष्मन दासी वृद्ध सी आई सरद सुजाति।
मनहु जगावन को हमहिं बीते बरषा राति।।

वर्षा में बाढ़युक्त नालियां अपने किनारों को डुबा देती हैं जैसे अभिसारिकाएं अपने धर्म के मार्ग को मिटा देती है–

अभसारिनि सी समझौ परनारी
सतमारग मेटन कौ अधिकारी।

उपदेशात्मक रूप में प्रकृति चित्रण– इतना ही नहीं, प्रकृति का उपदेशात्मक रूप का भी चित्रण केशवदास ने किया है कवि उनमें जीवन तथ्यों का संग्रह करता है–

तरनि–किरनि उदित भई, दीप जाति मलिन गई।

सदय ह्दय बोध–उदय, ज्यों कुबुद्धि नासै।।

प्रकृति का रूप केशवदास ने आलम्बन, उद्दीपन, उपमान, मानवीकरण आदि शैलियों का वर्णन किया है। स्पष्ट है केशव ने प्रकृति को कवि दृष्टि से नहीं अपितु कवि सम्प्रदाय की दृष्टि से देखा है। जो सर्वथा उचित है।

पाठ्यक्रमः—
एम.ए. हिन्दी द्वितीय छमाही

प्रस्तुतकर्ताः—
डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
बी.बी.ए.यू., लखनऊ